G.P. - Psychology

B.A. I (H) - Paper-I

Socio-cultural determinants of personality

Lecture-II

(5) पास-पड़ोस :→ बच्चों के व्यक्तित्व पर पास-पड़ोस का भी प्रभाव पड़ते देखा गया है। यदि पास-पड़ोस के लोग सभ्य तथा पढ़े-लिखे होते हैं तो इससे बच्चों में अच्छे शील-गुणों का विकास होता है। हरलॉक के अनुसार अच्छे पास-पड़ोस वाले बच्चों में अनुशासन की भावना, समझदारी, उत्तरदायित्व, आत्म-सम्मान आदि शीलगुणों का विकास होता है। वहीं जब पास-पड़ोस में चोर, डकैत, अपराधी व्यक्ति अधिक होते हैं, तो बच्चे भी उन व्यवहारों का अनुकरण करने लगते हैं और धीरे-धीरे उनमें असामाजिक शीलगुण विकसित होने लगते हैं।

(6) सामाजिक स्वीकृति :→ सामाजिक स्वीकृति से तात्पर्य व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों, जिन्हें वह महत्त्वपूर्ण समझता है, द्वारा प्रशंसा तथा अनुमोदन प्राप्त होने से होता है। प्राय: देखा गया है कि व्यक्ति अपने माता-पिता, शिक्षक तथा साथियों से सामाजिक स्वीकृति की तीव्र इच्छा रखता है। ऐसी परिस्थिति में वह अपने व्यक्तित्व में उन शीलगुणों को विकसित करने की कोशिश करता है जिसके द्वारा वह महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को प्रसन्न रखकर उनकी स्वीकृति तथा अनुमोदन प्राप्त कर सके। ऐसे व्यक्ति जिन्हें सामाजिक समूह जिसमें माता-पिता, शिक्षक, संगी-साथी आदि प्रमुख होते हैं, द्वारा सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है, उनमें आत्म-विश्वास, नेतृत्व का गुण, श्रेष्ठता का भाव आदि का शीलगुण तीव्रता से विकसित होता है। दूसरी तरफ, जिन व्यक्तियों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं होती है, उनमें अन्तर्मुखता, आत्महीनता, सामाजिक समायोजन की कमी आदि शीलगुण विकसित हो जाते हैं।

(7) संस्कृति :→ व्यक्तित्व के विकास में संस्कृति का महत्त्वपूर्ण

योगदान होता है। संस्कृति एक व्यापक शब्द है जिसका अर्थ समाज के रीति-रिवाज, आदतों, परम्पराओं, रहन-सहन के तौर-तरीकों से होता है। प्रत्येक समाज की एक विशेष संस्कृति होती है और चूँकि प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी समाज में जन्म लेता है अतः उस समाज की संस्कृति का प्रभाव उनके व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर काफी पड़ता है। विभिन्न प्रयोगात्मक सबूतों एवं मानवशास्त्रीय सबूतों के आधार पर यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व के शीलगुणों के विकास पर संस्कृति के रीति-रिवाजों, प्रथाओं आदि का प्रभाव काफी पड़ता है। इसी कारण कहा जाता है कि 'व्यक्तित्व संस्कृति का आईना है।'

(4) आर्थिक कारक :— व्यक्तित्व के विकास पर परिवार की आर्थिक स्थिति का भी प्रभाव पड़ता है। स्टैगनर ने अपने अध्ययन में पाया कि गरीब परिवार के बच्चों में हीनता का भाव, सांवेगिक अस्थिरता, शर्मीलापन, सामाजिक अनुभाई की कमी आदि का शीलगुण विकसित होता है। हालाँकि भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व० लालबहादुर शास्त्री जैसे उदाहरणों के द्वारा इस बात का खंडन किया गया है। परन्तु व्यक्तित्व के विकास में आर्थिक कारक निश्चित रूप से प्रभावी होता है।

व्यक्तित्व के निर्धारण में जैविक कारकों एवं सामाजिक या पर्यावरणी कारकों का संयुक्त प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व जैसा भी हो, वह इन दोनों कारकों के अन्तःक्रिया का परिणाम होता है। अकेले कोई एक कारक उतना महत्वपूर्ण नहीं होता है।

Scanned with CamScanner